ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 122-125
www.allresearchjournal.com
Received: 13-07-2020
Accepted: 15-08-2020

रईसा खातुन
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रईसा खातुन
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

परिवार जीवन शिक्षा में विद्यालय और धर्म की महत्ता

रईसा खातुन

सारांश
अपने बच्चों को पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने के लिए बहुत से माता–पिता के पास तकनीकी ज्ञान एवं क्षमता नहीं होती। ऐसे बच्चों के लिए पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने में स्कूल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्कूल में शिक्षक ही इस शिक्षा के लिए प्रमुख पात्र होता है। शिक्षकों में क्षमता भी होती है और बहुत से बध्ये शिक्षक पर ज्यादा भरोसा करते हैं। संगी साथी भी युवाओं को साजिक दोचा और मान्यताओं के अनुरूप तैयार होने में मदद करते हैं। युवा भी संगी साथियों में ज्यादा सहज और खुलापन महसूस करता है। धर्म भी युवाओं को विवाह एवं परिवार के लिए तैयार करने में अहम भूमिका निभाता है। सफल पारिवारिक जीवन के लिए धार्मिक पृष्ठभूमि एवं धार्मिक मूल्यों का होना अति आवश्यकता है।

प्रस्तावनाः
पारिवारिक जीवन शिक्षा में स्कूल एवं धर्म की भी कोई भूमिका है? कई लोग इस बात को कम करके औकते हैं। यद्यपि पारिवारिक जीवन की शिक्षा के लिए घर ही सबसे घटक है तो भी स्कूल की भी अहम भूमिका है। स्कूल को घर का ही विस्तार कह सकते हैं। क्योंकि स्कूल का बच्चों से नियमित एवं निरंतर सम्पर्क होता है। अतः यह भी पारिवारिक शिक्षा व प्रशिक्षण देने में पूरक तत्व है। स्कूल की आय बह अवधि है जब बच्चे का व्यापक दायरा बढ़ता है। वह अन्य साथियों, शिक्षकों एवं अन्य प्रौद व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है जो समाज का ही हिस्सा हैं। अतः स्कूल में भी पारिवारिक जीवन की शिक्षा को समझने के पर्याप्त अवसर होते हैं।
स्कूल को हस्तक्षेप क्यों करना चाहिए? बहुत से माता–पिता के पास तकनीकी ज्ञान नहीं होता, बच्चों के उन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए जो वे सेक्स एवं परिवार के बारे में पूछते हैं। जब बच्चे बढ़ रहे होते हैं तो उनको स्वस्थ मानसिकता एवं सही फैसले करने एवं चुनाव करने में बच्चों की सहायता करने की योग्यता कुछ माता पित्ता में नहीं होती। माता–पिता द्वारा दी गई अनौपचारिक शिक्षा प्रायः पारिवारिक जीबन की शिक्षा के वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल सिद्ध होती है।
अधिकतर भारतीय घरों में, माता–पिता अशिक्षित होते हैं और बच्चों को पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने में सक्षम नहीं होते। बहुत से पुराने मूल्य और धारणाएँ बदल गई हैं। ऐसे हालात में, स्कूल ही घर की अपेक्षा, पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने में ज्यादा विश्वसनीय है। स्कूल माता–पिता के नुकाबले ज्यादा विस्तृत एवं योजनाबद्ध तरीके से शिक्षा दे सकता है।
स्कूलों में पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने पर कोई प्रतिबंध है। आमतौर पर पारिवारिक जीवन की शिक्षा को सेक्स शिक्षा के समान देखा जाता है। बहुत से माता–पिता इस क्षेत्र के लिए समूह शिक्षा को शंका या भय की दृष्टि से देखते हैं। निःसंदेह इन पाठ्यक्रमों में सेक्स शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है लेकिन पारिवारिक शिक्षा के प्रति इन पाठ्यक्रमों में ऐसी कोई बात नहीं है। माता–पिता को इस बाबत आश्वस्त रहना चाहिए।
इस शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य जिन्दगी में उपयुक्त चुनाव की रूपरेखा बताना है। पारिवारिक जिन्दगी में बुद्धिमता पूर्ण निर्णय लेने हेतु बच्चों को सेक्स और पारिवारिक जिन्दगी के बारे में सही सच्ची जानकारी मिलनी चाहिए। इस शिक्षा हेतु माता पिता एवं शिक्षकों द्वारा एक सांझा प्रयत्न किया जाना चाहिए। स्कूलों में ऐसी जानकारी बिना किसी उत्तेजना अथवा दबाव के ज्यादा निष्पक्ष और प्रभावी तरीके से दी जा सकती है।

परिवार जीवन शिक्षा देने में शिक्षक की भूमिका
स्कूल में बच्चों को पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने के लिए शिक्षक ही मुख्य व्यक्ति होता है। शिक्षक स्वयं सक्षम, मेधावी और विवेकपूर्ण होना चाहिए। स्कूल का कोई भी शिक्षक पारिवारिक शिक्षा दे सकता है। स्कूल में पढ़ाए जाने वाले प्रत्येक विषय और वहाँ के कार्यकलाप जीवन को बेहतर तरीके से समझने में योगदान दे सकते हैं।

स्कूल में प्राप्त किए अनुभव आदर्शों और मूल्यों के निर्माण में सहयोग देते हैं। बदले में इससे बच्चे के चरित्र निर्माण में मदद मिलती है। यह शिक्षा वैयक्तिक स्तर एवं सामाजिक स्तर पर समन्वय बैठाने में भी योगदान देती है।

हम जानते हैं कि सेक्स शिक्षा भी पारिवारिक जीवन शिक्षा का एक अहम पहलू है। शिक्षक ये शिक्षा बिना किसी झिझक के दे सकता है। शिक्षक इस गूढतम व्यक्तिगत रहस्य को भी प्रभावशाली तरीके से वर्णन कर सकता है। ज्यादा से ज्यादा छात्र शिक्षक के पास अपनी निजी एवं सामान्य समस्याएँ लेकर आते है इसके लिए वे माता–पिता की अपेक्षा शिक्षक को वरीयता देते है। उनका विश्वास है कि शिक्षक ज्यादा जानकार और ज्यादा व्यवस्थित होते हैं।

स्वयं के बारे में ज्यादा बेहतर जानने के लिए शिक्षक बच्चों की मदद करते हैं ताकि भविष्य में वे ज्यादा व्यवस्थित हो सकें। शिक्षक का कार्य होता है जानकारी देना, संदेहों को दूर करना और मार्ग दर्शन करना – संक्षेप में एक परामर्शदाता। अज्ञानता की अपेक्षा जानकारी से परिपूर्ण युवा पीढ़ी आगे बढ़ने में आने वाली चुनौतियों का सामना सेक्स एवं वैवाहिक जीवन की बातों को बेहतर समझ के द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से कर सकेगी।

संगी साथियों की भूमिका

पारिवारिक जीवन की शिक्षा में संगी साथियों की क्या भूमिका है? जब वे स्कूल जाने लगते हैं बच्चे अपना अधिकांश समय घर से बाहर अपने संगी साथियों में व्यतीत करते हैं। अतः संग साथियों का बच्चे के दृष्टिकोण, व्यवहार एवं हित आदि पर परिवार से भी ज्यादा प्रभाव पड़ता है। संगी साथी युवक को सामाजिक ढाँचा एवं मान्यताओं के अनुरूप उसको सामाजिक बनाने में मदद करते हैं युवक भी अपने समूह में अधिक खुलापन और स्वतंत्रता महसूस करता है। साथ ही साथी समूह एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करते हैं भौतिक और सामाजिक दक्षता एवं सामाजिक भूमिका को विकसित करने के लिए। इस प्रक्रिया में उनकी भूमिका एक शिक्षक की तरह की होती है। इन सबसे किशोर को सुरक्षा एवं सहारा मिलता है। यह वह स्थिति है जब वह स्वतंत्र होना चाहता है।

परिवार जीवन शिक्षा में घर, विद्यालय और धर्म की भूमिका

77

संगी साथियों का प्रभाव जहाँ बेहरत व्यवस्थित होने में सहायक होता है वहीं इनमें प्राप्त जानकारी एवं अनुभव के साथ कुछ खतरे भी जुड़े रहते हैं यह खासकर सेक्स और वैवाहिक जीवन के संदर्भ में हो सकते हैं। प्राप्त जानकारी गलत एवं खतरनाक भी हो सकती है। संगी साधी बुरी नीयत वाले अथवा अनुभव शून्य भी हो सकते हैं। ऐसी कोई गलत. अपर्याप्त अथवा विकृत जानकारी सेक्स या वैवाहिक जीवन के संदर्भ में, जीवन में अलाभकारी एवं गलत दृष्टिकोण पैदा कर सकती है। यह बाद में गंभीर मानसिक तनाव, चिन्ता या गलत व्यवहार की और ले जा सकती है। वैवाहिक जीवन की कुछ समस्याएँ जैसे दृ नपुंसकता, ठण्डापन, अपराध–भावना, काम विकृति, अत्यधिक कामुकता आदि ये सब संगी साथियों के नकारात्मक प्रभाव का नतीजा होता है।

परिवार जीवन शिक्षा में धर्म की भूमिका

पारिवारिक जीवन की शिक्षा सभी धर्मों द्वारा अनौपचारिक रूप से परिवारों के माध्यम से ही दी जाती है। भारत के संदर्भ में, एक व्यक्ति के जीवन में धर्म का स्थान अति महत्वपूर्ण है। विवाह और परिवार को प्रत्येक धर्म द्वारा पवित्र माना गया है। प्रत्येक धर्म में विवाह और परिवार के लिए अपने–अपने कानून और नियम और तौर तरीक हैं।

अलग–अलग धर्मों में पारिवारिक संस्कृति अलग–अलग होती है। एक सफल पारिवारिक जीवन जीने के लिए मजबूत धार्मिक आधार होना बहुत आवश्यक है। आजकल युवाओं में एक फैशन बन गया है कि भगवान को अस्वीकारना एवं भौतिक संसार को महत्व देना। धर्म निरपेक्षता का युवा पीढ़ी ने गलत अर्थ निकाला है। श्री. सी. राजगोपालाचारी के अनुसार धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य यह नहीं है कि लड़को और लड़कियों को अनुशासन के लाभों से वंचित किया जाए जिसे अलग अलग धर्मों के परिवारों ने खुले रूप से स्वीकार किए हैं।

अभी तक धर्मों के द्वारा पारिवारिक जीवन की विधिवत् शिक्षा के लिए कोई गंभीर सोच विचार नहीं किया गया था। लेकिन वैवाहिक संबंधों की टूटन का बढ़ता प्रतिशत और पारिवारिक जीवन में समस्याओं का बढ़ना, इनके कारण प्रायः समी धर्म इसको गभीरता से ले रहे हैं। कई धर्म, खासतौर से ईसाई, इन्होंने पारिवारिक जीवन की शिक्षा में कई सकारात्मक कदम उठाएँ हैं। पारिवारिक जीवन में अनुकूलन के प्रयास किए जा रहे हैं। पारिवारिक सलाक सुविधाएँ आयोजित की जाती हैं। चर्च को केन्द्रित कर चलाये जा रहे कार्यक्रम व्यापक रूप से स्वीकार्य हो रहे हैं और गति पकड़ रहे हैं। बहुत से दम्पत्ति सहायता एवं मार्गदर्शन हेतु इन केन्द्रों पर आते हैं।

अपने सदस्यों के लिए पारिवारिक जीवन की शिक्षा प्रदान करना प्रत्येक धर्म की अपनी जिम्मेवारी है। युवाओं को विवाह एवं पारिवारिक जीवन के बारे में जानने का अवसर इसकी शुरुआत करने से पहले ही उपलब्ध होना चाहिए । धार्मिक मूल्य किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को और भी अधिक निखार सकते हैं।

जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में परिवार जीवन शिक्षा की पद्धतियाँ

पारिवारिक जीवन की शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें पुरुषों व स्त्रियों को परिपक्व बनाने वाले ज्ञान, दक्षता, दृ ष्टिकोण और नैतिक मूल्य आदि सम्मिलित हैं। ये शिक्षा व्यक्ति को विवाह, परिवार एवं समाज में उसकी अपनी भूमिका की पहचान कराने में सहायक होनी चाहिए।

हम यह प्रशिक्षण किस प्रकार दे सकते हैं? इस शिक्षा को देने के लिए कौन सी पद्धतियों है? किसी भी व्यक्ति के जीवन में विवाह और परिवार का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। लेकिन बहुत थोड़े से दम्पत्ति ही इसका अनुभव रखते है क्योंकि इसके लिए विशेष जानकारी एवं शिक्षा आवश्यक होती है। इस शिक्षा के महत्त्व को ठीक से समझा नहीं गया है। आमतौर से यह अपेक्षा माता–पिता से की जाती है कि वे इस कार्य को समझते हैं। इससे कई तरह की प्रान्तियों हो सकती हैं। बहुत से माता–पिता उन्हीं बातों पर भरोसा करते हैं जो उनके पालन पोषण के समय की उन्हें याद रहती है। वे भी अपने मित्रों एवं माता–पिता की सलाह पर निर्भर रहते हैं।

प्रायः सामान्य ज्ञान एवं बच्चों की देखभाल की पुस्तके युवा दम्पत्ति के लिए मार्गदर्शक होती हैं। परन्तु ये पूरी तरह ठीक नहीं हैं। जिस प्रकार अन्य किसी व्यवसाय जैसे – अध्यापन, नर्सिग, वाहन चालन या अन्य कोई व्यवसाय कार्य की शुरुआत से पहले कई वर्षों के खास प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कई व्यवसायों में तो सेवाकालीन प्रशिक्षण भी दिया जाता है। लेकिन अधिकांश व्यक्तियों के लिए विवाह के लिए विवाह पूर्व की शिक्षा की आवश्यकता विचारणीय प्रश्न नहीं है। आसानी से यह उपलब्ध भी नहीं है। लेकिन आजकल इस प्रशिक्षण की महत्ता व्यापक रूप से स्वीकार की जाने लगी है।

क्योंकि पारिवारिक जीवन की शिक्षा मुख्यतः घर और स्कूल द्वारा ही दी जाती है. हम उनके द्वारा अपनाई जाने वाली पद्धतियों अलग–अलग अवस्थाओं के अनुरूप जैसे – स्कूल पूर्व की उम्र, प्राथमिक अवस्था (जन्म 6 से 9 वर्ष), किशोरावस्था से पूर्व एवं किशोरावस्था में, इनकी चर्चा सिलसिलेवार करेंगे।

विद्यालय पूर्व की स्थिति

यह वह अवस्था है जहाँ पारिवारिक जीवन की शिक्षा का दायित्व

पूर्ण रूप से परिवार का होता है। स्कूल इस प्रकरण में कहीं भी नहीं आता। प्राथमिक रवैया जो प्रारंभिक वर्षों में घर में स्थापित होता है, बाद के दृष्टिकोण पर भी व्यापक असर रखता है। बच्चा प्रारंभिक जीवन का अधिक समय माता–पिता एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों के बीच व्यतीत करता है। अत पारिवारिक जीवन की शिक्षा की शुरुआत घर से ही होनी चाहिए। बाल्यकाल में माता को आगे आना पड़ता है। व्यक्तित्व का यह मूलभूत नमूना बाल्यकाल में ही बनने लगता है। यह कहा जाता है कि सेक्स शिक्षा भी माता–पिता द्वारा बच्चों को युवा होने पर दी जाती है जबकि वह ऐत्ता कई साल पहले शुरू कर सकते है।

बढ़ती लड़की के लिए. उसकी माँ आदर्श रूप होती है। छोटी लड़की कई तरीकों से अपनी माता को पहचानने की कोशिश करेगी। लेकिन लड़की को पिता की आवाज, स्पर्श और गर्माहट को भी महसूस करना चाहिए जो कि उसकी माता से एकदम अलग है। पिता की शक्ति, उनका विश्वास और लड़की के प्रति उनका व्यवहार ये सब भी उसके नन्हें दिमाग में एक अच्छे मनुष्य के विचार की छाप छोड़ते हैं। यदि वह इस तरह का अवसर चूकती है तो उसके लिए बाद में लड़कों और पुरुषों को समझना और उनके प्रति प्रशंसा का भाव मन में लाना बड़ा मुश्किल हो जाएगा। एक पुरुष का, अपने पिता के बारे में उसका अनुभव एक सुखद राह की भांति, अपने पति के साथ सामंजस्य करने और उसको समझने में उसके सामने होगा जब उसका विवाह हो जाएगा।

बढता लडका भी अपने माता और पिता से बहत कछ सीखता है। माता की चिन्ता और स्नेह और छोटी–छोटी सुविधाओं का ख्याल रखना, कोमलता, गर्माहट और सहनशीलता ये सब उसको एक अकी औरत की, उसकी पत्नी की पहचान कराते हैं। पिता का व्यवहार यह सिद्ध करता है कि एक पुरुष दृढ निश्चयी एवं शक्तिशाली होते हुए भी दयालु और विचारवान हो सकता है।

घर के किसी विशेष कार्य की जिम्मेवारी को लेना और पूर्ण करना कोई आसान कार्य नहीं है। लेकिन माता–पिता का व्यवहार और भावना जिसके अन्तर्गत घर की जिम्मेवारियों पूरी की जाती है, ये बच्चे के दृष्टिकोण का, स्त्री अथवा पुरुष के प्रति, आकार निश्चित करती हैं जो आगे की जिन्दगी में लाभकारी सिद्ध होती

विद्यालय पूर्व की उम्र वाले बच्चे जिज्ञासु होते हैं क्योंकि उनके लिए आसपास की चीजें नई एवं उत्तेजनात्मक होती हैं। फ्रेंड के अनुसार किसी व्यक्ति के जीवन के प्रधम छह वर्ष निर्माणात्मक होते हैं अतरू इस उम्र में प्राप्त किए गए अनुभव बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

हमने अभी–अभी उन अनौपचारिक तरीकों की चर्चा की है जो माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए अपनाते हैं। सामान्यतः यह एक अप्रत्यक्ष एवं अनौपचारिक प्रक्रिया है। शिक्षा का मतलब है कि ना केवल यह जानना कि क्या पढ़ाया जाए बल्कि यह भी कि परिवार में रोजमर्रा के अनुभवों से व्यक्ति क्या ग्रहण करता है?

बच्चा परिवार के सदस्यों एवं माता–पिता द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरणों से बहुत कुछ सीखता है। घर का भौतिक एवं भावनात्मक वातावरण सुव्यवस्थित, शांत एवं निर्मल होना बहुत जरूरी है। जो चीजें बच्चे की घर पर होने वाले शिक्षा को सबसे ज्यादा प्रभाव डालती है वे हैं आदेश, व्यवस्था, समय की पाबंदी, सफाई. किताबें, कला, संगीत, प्रार्थना आदि का होना अथवा इनकी अनुपस्थिति। ये तत्व बाद की पारिवारिक जिन्दगी को बनाने में बहुत प्रभावशाली करके सीखना वाला तरीका भी पारिवारिक जीवन की शिक्षा के समय अपनाया जाना चाहिए। बच्चे को घर पर होने वाले कार्य कलापों जैसे कार्य, मनोरंजन, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकलाप आदि के दौरान बच्चों को इनमें हिस्सा लेने का पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिए। परिवार में दिन–प्रतिदिन होने वाले अनुभवों से बच्चा चरित्र, बुद्धिमता. भावनात्मक एवं शारीरिक परिपक्वता, धार्मिक एवं नैतिक मूल्य आदि धीरे–धीरे अपने अन्दर समेटता है।

पारिवारिक जीवन शिक्षा औपचारिक

शिक्षा के अनौपचारिक और अप्रत्यक्ष पद्धतियों के अलावा, माता–पिता को स्कूल पूर्व उम्र के बच्चों द्वारा उठाए गए सवालों का जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए। माता–पिता को उसका न केवल उत्तर देना है बल्कि सावधान भी रहना है। उलझन भरे प्रश्न पूछने के लिए खौटना नहीं चाहिए। उत्तर देने के लिए परीकथाओं का आश्रय भी नहीं लेना चाहिए। उनकी उम्म को देखते हुए बुद्धिमानीपूर्ण उत्तर देने चाहिए साथ ही युक्ति संगत उदाहरण भी। अच्छा होगा कि वैज्ञानिक शब्दों का इस्तेमाल किया जाए।

लेकिन दुर्भाग्य है कि भारतीय भाषाओं में सही वैज्ञानिक शब्दावली नहीं है। जवाब देने से पहले बाच्चे का पूर्वज्ञान भी ध्यान में रखना चाहिए। माता–पिता को अच्छा प्राता भी बनना चाहिए। स्पष्ट, ईमानदार और अविचल बने रहना चाहिए तथा झूठी सूचनाओं का सहारा कदापि न लें। यदि माता–पिता उत्तर देने के लिए इन्कार करते हैं तो बच्चा भविष्य में प्रश्न नहीं पूछेगा।

स्कूल जाने की उम्र (6 – 9 वर्ष)

स्कूल नहीं जाने वाला बच्चा किस प्रकार से भिन्न होता है? अब बच्चा लिंगीय भूमिका से परिचित हो जाता है। इस उम्र में उचित भूमिका का प्रतिकाप होना जरूरी है। जो सबसे प्रमुख बात बच्चा इस उम्र में ग्रहण करता है वह है कि माता पिता किस प्रकार कार्य करते हैं। माता–पिता के एक दूसरे के प्रति किए गए कार्य, व्यवहार एवं दायित्वों की ओर बच्चों की दृष्टि रहती है। यदि पिता–माता के कार्यों को हेय दृष्टि से देखता है अथवा स्वयं को मुखिया एवं भरण पोषणकर्ता समझता है तो बाद में बध्ये भी ऐसा ही दृष्टिकोण धारण करते हैं।

निष्कर्षः

माता का एक औरत, एक पत्नी और एक माता के रूप में दृष्टिकोण उसका स्त्री होने को स्वीकारना, और पिता का एक पुरुष का व्यवहार, उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति उसकी सहेश्य को पर्ण करने की भावना ये सब प्रमख तत्व बच्चे के व्यक्तित्वको निखारते हैं। विनम्रता और गर्माहट तथा विशेष लगाब माता–पिता के आपसी रिश्तों का स्नेह ये सब बच्चे के लिए अच अनुभव है। बब्बा इन सबसे यह जानता है कि स्नेह एक इच्छित. महत्वपूर्ण और स्वागत योग्य भावना है। जब वह जीवन के तथ्यों को बड़े होकर जान पाते हैं वे याद रखते हैं कि यह भी प्यार की एक अभिव्यक्ति है।

सामाजिक और धार्मिक संगठन युवाओं को पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने में एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। पिछले कुछ समय से सामाजिक एवं धार्मिक संगठन युवाओं के लिए जीवन से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे है। किशोर, नव विवाहित दम्पत्ति एवं प्रौद विवाहित दम्पत्ति ऐसी एजेन्सियों के पास मार्ग दर्शन के लिए पहुंचते हैं। पारिवारिक अदालतें एवं परिवार परामर्श केन्द्र भी पारिवारिक मामलों में युवाओं और युवा दम्पत्तियों की सहायता करके बड़ा अच्छा कार्य कर सकते हैं।

संदर्भ–सूचीः

1. मित्तल, एम. एन. (2005) ''षिक्षा के समाजषास्त्रीय आधार'', इन्टरनेषनल पब्लिषिंग हाऊस, मेरठ
2. समाजषास्त्र के सिद्धान्त, विद्याभूषण, डी. आर. सचदेव, किताब महल नई दिल्ली ''समाजीकरण में परिवार का महत्व''
3. विद्या मेघ दिसम्बर 2007, विद्या प्रकाषन मंदिर लि. मेरठ, ''किषोरावस्था में पारिवारिक सम्बन्धों की भूमिका''

4. सिंह, डॉ. लाभ (2001) असामान्य मनोविज्ञान, ''समायोजन की कसौटियां''
5. पी.डी. पाठक व त्यागी (2002)– शिक्षा के सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
6. डॉ. मधुबाला गुप्ता– बालक के विकास में परिवार व विद्यालय की भूमिका, लैब सहायक, गृह विज्ञान (रा.मा.दे. महिला, महाविद्यालय विजनौर)
7. श्रीमती मंजू त्यागी (2002)– बाल विकास में परिवार का योगदान, प्रवक्ता टैक्सटाइल डिजाइनिंग, चित्रकला विभाग बाल विकास में परिवार का योगदान
8. फ्रीमैन उद्धृत एस.पी. गुप्ता (2003)– शिक्षा में मापन तथा मूल्यांकन, शारदा प्रकाशन, इलाहाबाद